Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 2100–2108

SOCIO-ECONOMIC AND POLITICAL STATUS OF WOMEN OF BHIL TRIBE: A SOCIOLOGICAL PERSPECTIVE

भील जनजाति की महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक स्थिति: एक सामाजिक दृष्टिकोण

Neha Malviya [1], Abhishek Ateriya [2], Ashok Prajapati [3], Ajay Kumar Vishwakarma [4]

[1] Research Scholar, Department of Sociology and Social Work, Dr. Harisingh Gour University
[2] Research Scholar, Jiwaji University, Gwalior Sociology Department
[3] Research Scholar, Sociology and Social Work Study Centre, Vikram University Ujjain
[4] Department of Sociology and Social Work, Dr. Harisingh Gour University

ABSTRACT

English: The Satpura mountain range is located on the border of Maharashtra and Madhya Pradesh, it stands like an invincible natural wall. The mountain range is famous for its inaccessible geographical structure and dense forests. Various tribes reside in Satpura, famous as 'Seven Mountains'. Tribes like Bhil, Pawra, Kokani, Mawachi, Gavit, Nayakda, Rathwa, Nahal, Barela, Tadvi, Dhanka, Pardhi, Thakur and Patel live here. Various sub-castes of these tribes also reside here in large numbers. These tribes are settled in the forests of Maharashtra as well as Madhya Pradesh on the northern border of the Satpura Mountains. The name 'Satpura' means 'seven mountains' and this mountain range is surrounded by dense forests, where the Bhil tribe lives, which is considered to be the largest tribe here. Two major western rivers, Tapi and Narmada flow within the Satpura mountain range. This region is not only a natural division, but the tribes here are also famous for their cultural customs, traditional craftsmanship, and social structures. These include the institution of Kathi and the system of Jagirdars, which has been a symbol of power and control among the communities. The life of these tribes is steeped in traditions, such as the manufacture of stone products, wearing loincloths, and participating in cultural rituals. These tribes have historically played the role of sentinels at the 'windows' of forts, which played an important role in the security and administration of the region. The rivers flowing in the forests of Satpura like Tapi and Narmada are an integral part of the lives of these tribes. These rivers and forests keep the soil fertile and provide the tribal communities with the resources they need for their livelihood. The biological diversity and cultural heritage of Satpura makes it not only a natural heritage but also a tourist attraction. The tribes here have preserved their traditional lifestyle and cultural heritage, which provides a unique experience to the tourists. The conservation of the Satpura mountain range and the protection of its inhabitants is important for future generations.

Hindi: सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित है, यह एक अजेय प्राकृतिक दीवार की तरह खड़ी है। पर्वत श्रृंखला अपनी दुर्गम भौगोलिक संरचना और घने जंगलों के लिए प्रसिद्ध है। 'सात पर्वत' के नाम से प्रसिद्ध सतपुड़ा में विभिन्न जनजातियाँ निवास करती हैं। यहाँ भील, पावरा, कोकानी, मावाची, गावित, नायकड़ा, राठवा, नहाल, बरेला, तड़वी, ढांका, पारधी, ठाकुर और पटेल जैसी जनजातियाँ वास करती हैं। इन जनजातियों की विभिन्न उप-जातियाँ भी यहाँ बड़ी संख्या में निवास करती हैं। सतपुड़ा पर्वत की उत्तरी सीमा पर महाराष्ट्र के साथ-साथ मध्य प्रदेश के जंगलों में यह जनजातियाँ बसी हुई हैं। 'सतपुड़ा' नाम का अर्थ है 'सात पर्वत' और यह पर्वत श्रृंखला घने जंगलों से घिरी हुई है, जहाँ भील जनजाति का वास है, जो यहाँ की सबसे बड़ी जनजाति मानी जाती है। सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला के भीतर दो प्रमुख पश्चिमी नदियाँ, तापी और नर्मदा बहती हैं। यह क्षेत्र न केवल एक प्राकृतिक विभाजन है, बल्कि यहाँ की जनजातियाँ अपने सांस्कृतिक रीति-रिवाजों, पारंपरिक कारीगरी, और सामाजिक संरचनाओं के लिए भी प्रसिद्ध हैं। इनमें काठी संस्था और जागीरदारों की

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.3310

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

व्यवस्था भी शामिल है, जो समुदायों के बीच शक्ति और नियंत्रण का प्रतीक रही है। इन जनजातियों का जीवन परंपराओं में रचा-बसा है, जैसे कि पत्थर के उत्पादों का निर्माण, लंगोट पहनना और सांस्कृतिक अनुष्ठानों में भाग लेना। इन जनजातियों ने ऐतिहासिक रूप से किलों के 'वातायनों' पर प्रहरी की भूमिका निभाई है, जो इस क्षेत्र की सुरक्षा और प्रशासन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। सतपुड़ा के जंगलों में बहने वाली नदियाँ जैसे तापी और नर्मदा इन जनजातियों के जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। इन नदियों और जंगलों के कारण यहाँ की मिट्टी उर्वरा है और यहाँ के जनजातीय समुदायों को जीवन यापन के लिए आवश्यक संसाधन मिलते हैं। सतपुड़ा की जैविक विविधता और सांस्कृतिक धरोहर इसे न केवल एक प्राकृतिक धरोहर बनाती है बल्कि पर्यटन के लिए भी एक आकर्षण का केंद्र बनाती है। यहाँ की जनजातियाँ अपनी पारंपरिक जीवनशैली और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखे हुए हैं, जो पर्यटकों को एक अनोखा अनुभव प्रदान करती हैं। सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला का संरक्षण और इसके निवासियों का संरक्षण भविष्य पीढ़ियों के लिए महत्त्वपूर्ण है।

Keywords: Tribal Tribes, Travel Security, Guards on the Windows of Forts, Jaglya, Bhil Jagirs, Kathi Institution, Stone Products, Langot, Cultural Rituals, Jagirdar, Chiptan,
आदिवासी जनजातियाँ, यात्रा सुरक्षा, किलों के वातायनों पर प्रहरी, जगल्या, भील जागीरें, काठी संस्था, पत्थर उत्पाद, लंगोट, सांस्कृतिक अनुष्ठान, जगीरदार, चिपटन

1. प्रस्तावना

भील जनजातियाँ

भील जनजातियों का निवास क्षेत्र अबू और आशिरगढ़ के बीच स्थित पर्वतीय क्षेत्र में है, जहाँ से यह जनजाति प्रवासित हो सकती है। कर्नल लॉर्ड ने कहा है कि मेवाड़ में सबसे पहली बस्ती भील जनजाति की थी। टी० बी० नायक ने अपनी पुस्तक "The Bhils – A Study" में यह कहा है कि भील जनजाति देश की आदिवासी जनजातियों में से एक है। भील जनजाति को ऐतिहासिक नामों जैसे निशाद, किरात, शबर आदि से भी जाना जाता है।2

विल्सन के अनुसार, 'भील' शब्द भिल्लि से आया है, जिसका अर्थ है धनुष। इस नाम का पहला उल्लेख इतिहास में लगभग 600 ईसा पूर्व हुआ था। टॉलमी के अनुसार, नर्मदा के दक्षिणी किनारे पर फिलित और कोंडली या गोंडली यानी संभवतः भील और गोंड जनजातियाँ बसी हुई थीं। भील जनजाति का उल्लेख रामायण, महाभारत, पंचतंत्र आदि ग्रंथों में भी किया गया है। उनके वंशज आज भी सतपुड़ा के पहाड़ी क्षेत्रों में पाए जाते हैं।3

मुस्लिम शासनकाल के दौरान भील जनजाति की कोई विशेष समस्या का उल्लेख नहीं है लेकिन मराठा शासन के दौरान वे खंडेश में उत्पात मचाते थे। मराठा काल में भील जनजाति को नियंत्रित करने के लिए उपाय किए गए थे। कुछ भील सरदारों को यात्रा सुरक्षा का कार्य सौंपा गया था और कुछ को किलों और महत्त्वपूर्ण वाटनों की सुरक्षा का जिम्मा दिया गया था। कुछ भील जनजाति को कृषि कार्य में भी लगाया गया। 1833 के आंकड़ों के अनुसार, खंडेश में भील जनजाति की संख्या 55 हजार थी जबकि उस समय खंडेश की कुल जनसंख्या लगभग पाँच लाख थी। कम संख्या में होने के बावजूद भील जनजाति ने खंडेश में ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष किया। जब भील जनजाति के उत्पात बढ़े तो ब्रिटिशों ने इसे नियंत्रित करने के उपाय किए।4

भील जनजाति की कई उप-जनजातियाँ जैसे बार्डे, वासावे, नायक, लध्या, गोवाळ, माथवाड़ा, कोटाले और देहवाल्या भी सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाओं में पाई जाती हैं। इन उप-जनजातियों को वर्तमान में किए गए शोध में भी प्रमुखता से स्थान दिया गया है।5

बार्डे भील

बार्डे भील जनजाति का मुख्य निवास क्षेत्र खंडेश के अक्कलनुआ, आक्रानी, शाहादा, तालोड़ा, शिरपुर, चोपड़ा और यावल तालुका में पाया जाता है। इनकी बस्ती गाँव में अलग से बसी होती है जिसे 'भीलतिया' कहा जाता है। महिलाओं का पारंपरिक वस्त्र अखुड साड़ी और चोड़ी होता है। ब्रिटिश काल के दौरान बार्डे भील जनजाति यात्रा सुरक्षा, गुड़ बेचने, कबाड़ बेचने और हाथ-संबंधी श्रम जैसी गतिविधियों में कार्यरत थी, जो उनके जीवनयापन का साधन था। बार्डे भील की बस्ती अधिकतर सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला में पाई जाती है।6

वासावे, वासवा, वालवी, पदवी भील

ये भील जनजाति के महत्त्वपूर्ण कबीले हैं। ये स्वयं को अन्य भील जनजातियों से श्रेष्ठ मानते हैं। वे खंडेश में आदिवासी संस्थाओं के जागीरदार होते थे या भील संस्थाओं के चिपटन (जमीन या जागीर) के मालिक होते थे। भील के इन जगीरदारों को 'संस्थान' कहा जाता था। उदाहरण के लिए कुमरिया वासावा और उमदया वासावा ने सागबारा संस्थान की स्थापना की थी। इसी प्रकार बढ़ते हुए वालवी के नाम पर उनके संस्थान का नाम 'राइजिंगपुर संस्थान' रखा गया था। इस संस्थान का वास्तविक नाम 'घवाली संस्थान' था। काठी, सिंगपुर, नाला और होजदाई पदवी कबीले के संस्थान थे। पदवी लोग पहाड़ियों में रहते थे जबकि वालवी उच्च इलाकों में और वासावे गाँवों में निवास करते थे। वासावे अपने मूल समुदाय तड़वी से अलग हो गए थे और यह स्थान से उत्पन्न हुए हो सकते हैं।

नायक भील

यह जनजाति सतपुड़ा की एक उन्नत आदिवासी जनजाति मानी जाती है। भील जनजाति के लोग जो वालवी, वासावा, पदवी कबीले से संबंधित होते थे, उन्हें 'कर्बारी' वातायन कहा जाता था। इस कबीले के लोग जो एक या दो गाँवों से अधिक क्षेत्रों के प्रभारी होते थे। उन्हें 'नकी' कहा जाता था।

इस जनजाति की प्रारंभिक महत्त्वाकांक्षा जंगलों में रहकर आस-पास की बस्तियों पर हमला करना, रक्तपात करना और विनाश करना थी। हालांकि, ब्रिटिशों ने सैनिक भेजकर नायकों को बसाया और उन्हें स्थिर किया।8

लध्या भील

लध्या भील जनजाति पश्चिमी सतपुड़ा श्रेणी के अक्कलनुआ तालुका के निचले हिस्से और तालोड़ा तालुका के पश्चिमी हिस्से में पाई जाती है। इस क्षेत्र में पावडी, वालवी, वासावा, गावित, वासवे, तड़वी आदि भील कबीले भी पाए जाते हैं। पूर्वी सतपुड़ा में लध्या भील के नाम से जाना जाने वाला यह भील समुदाय तोरणमल, चिकली, कुकर्मुंडा, बारवानी, सेंधवा, शिरपुर, चोपड़ा और यावल क्षेत्र में बसता है।9

माथवाड़िया भील

यह जनजाति अक्कलनुआ तालुका के मोलगी गाँव से लेकर नर्मदा नदी तक फैली हुई है, जो पश्चिमी सतपुड़ा से लेकर सतपुड़ा और आदिवासी भील क्षेत्रों तक विस्तृत है। खंडेश के तालोड़ा, शाहादा, नंदुरबार और पठार क्षेत्रों में इनको माथवाड़िया भील के रूप में जाना जाता है। इनकी बस्ती सतपुड़ा के ऊपरी हिस्से में पाई जाती है।10

बॉन्डे भील

बॉन्डे भील जनजाति की संख्या भील समूह में अपेक्षाकृत कम है। ये जनजाति सतपुड़ा क्षेत्र में अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाले समूह के रूप में जानी जाती है। बॉन्डे लोग गाँव से बाहर खुले में रहते हैं और इनके पास कपड़े नहीं होते। इनका मुख्य व्यवसाय पत्थर उत्पाद बनाना और बेचना है, जैसे कि पत्थर का गेट, पत्थर के वरवांटा, खलबट्टा, पत्थर की स्लैब आदि। बॉन्डे भील लोग देवी-देवताओं के मुखौटे पहनकर गाँव-गाँव जाकर कथाएँ सुनाते हैं और नृत्य करते हैं।11

गोवाल मंडलवासा भील

गोवाल भील लोग भी बॉन्डे लोगों की तरह गाँव में रहते हैं। ये लोग घर-घर जाकर अनाज इकट्ठा करते हैं। गांव में मवेशियों को चराना इनका कार्य होता है। ये मृत्यु और अंतिम संस्कार के दौरान वाद्ययंत्र बजाते हैं। पावरा जनजाति में ये लोग विवाह कार्यों में 'वजनतरी' के रूप में काम करते हैं। पावरा और भील समुदाय के किसी भी कार्यक्रम को बिना इनके पूरा नहीं किया जाता। इसलिए गोवाल जनजाति को सतपुड़ा की आदिवासी समाज में विशेष स्थान दिया गया था।12

टेड भील

टेड भील एक शिल्पकार जनजाति है, जैसे कि बॉन्डे लोग। इनकी संख्या सतपुड़ा क्षेत्र में अधिक है। यह समाज रंगीन धोती, बेल्ट जैसे लंगोट बुनकर के रूप में भील समाज का संचालन करता है। ये लोग बुनाई, घर-घर जाकर भोजन के लिए भिक्षा माँगना, गाँव में मवेशियों की देखभाल करना आदि कार्य करते हैं। सतपुड़ा की हर बस्ती में ये भील पाए जाते हैं। 1889 के भूमि जनगणना के दौरान इन भीलों ने ब्रिटिश अधिकारियों की बहुत सहायता की थी, जिसके बदले ब्रिटिशों ने इन्हें उपहार स्वरूप जमीन दी थी। लेकिन ये लोग कृषि कार्य नहीं करते।13

कोटले भील

कोटले भील जनजाति अपनी आजीविका शहर के आसपास रहकर और व्यापार करके चलाती है। इन्हें 'नायरे', 'नरोता' और 'भीवड़ा' के नाम से भी जाना जाता है। इनकी बस्ती मुख्य रूप से शाहादा, नंदुरबार तालुका के पूर्वी हिस्से, तालोड़ा तालुका के पूर्वी हिस्से और शिरपुर तालुका के पश्चिमी हिस्से में पाई जाती है। इनकी बस्ती को 'भीलतिया' कहा जाता है। ये लोग भील और पावरा से अलग एक अलग भाषा बोलते हैं।14

देहवाली भील

धुले और नंदुरबार जिले (खंडेश) और गुजरात राज्य के सूरत-भदोच जिलों में देहवाली भील समुदाय के लोग बसे हुए हैं। इनकी घनी आबादी अक्कलनुआ, नवापुर, नंदुरबार, तालोड़ा, शाहादा और शिरपुर तालुकों में पाई जाती है। तापी नदी के उत्तर में स्थित क्षेत्र को 'माथवार' कहा जाता है, जबकि इसके नीचे दक्षिण में स्थित क्षेत्र को 'देह' कहा जाता है। इन क्षेत्रों में भील की बस्ती को 'माथवाड़ी' और 'देहवाली' भील कहा जाता है। अक्कलनुआ तालुका के डाब गाँव को देहवाली भील का सांस्कृतिक केंद्र माना जाता है। जैसे भील जनजाति के कबीले, देहवाली भील के कबीले भी हैं, जैसे कि वालवी, पदवी, वासावे, नायक, गावित। ये उपनाम गाँवों में पाए जाते हैं। हालांकि इन समूहों के नाम अलग-अलग होते हैं, लेकिन इनकी भाषा, वस्त्र, संस्कृति, जीवनशैली, रिवाज, परंपराएँ, धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठान लगभग समान होते हैं।15

भील महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति

भील महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों के संयोजन से प्रभावित होती है। भील समुदाय भारत के सबसे बड़े आदिवासी समूहों में से एक है जो मुख्य रूप से भारत के मध्य और पश्चिमी क्षेत्रों जैसे राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र में रहता है। जबकि भील पुरुष कृषि श्रमिक, शिकारी और कारीगर के रूप में काम करते हैं, भील महिलाओं की भूमिका भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, लेकिन यह व्यापक सामाजिक-आर्थिक ढांचे में कम दिखाई देती है। इस खंड में भील महिलाओं की शिक्षा, रोजगार, आय और स्वास्थ्य स्थितियों की चर्चा की जाएगी।16

शिक्षा

भील महिलाओं के लिए शिक्षा एक प्रमुख चुनौती है। ऐतिहासिक रूप से आदिवासी समुदायों, जिसमें भील भी शामिल हैं, को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में काफी कठिनाइयाँ आती रही हैं। इन बाधाओं में भौगोलिक दूरियाँ, आधारभूत संरचनाओं की कमी और सांस्कृतिक प्रथाएँ शामिल हैं जो पुरुषों की शिक्षा को महिलाओं से अधिक प्राथमिकता देती हैं। कई भील गाँवों में स्कूल घर से दूर स्थित होते हैं, जिससे लड़कियों के लिए नियमित रूप से स्कूल जाना मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा घर के कामकाज और बच्चों की देखभाल में मदद करने के लिए लड़कियों को घर पर रखने की सांस्कृतिक प्रवृत्ति भी होती है, जो उन्हें औपचारिक शिक्षा से वंचित कर देती है। भील महिलाओं की साक्षरता दर उनके पुरुष साथियों की तुलना में काफी कम है। आदिवासी क्षेत्रों में कई महिलाएँ निरक्षर होती हैं या केवल कुछ सालों तक पढ़ाई करती हैं। विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार, जहाँ भील पुरुष सामान्यतः बाहर काम करते हैं, वहीं भील महिलाओं की पारंपरिक भूमिकाएँ घरेलू जिम्मेदारियों और कृषि श्रम तक सीमित होती हैं, जो उनकी शिक्षा के अवसरों को सीमित कर देती हैं।17

हालांकि, हाल के वर्षों में सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) द्वारा आदिवासी महिलाओं की साक्षरता दर को सुधारने के लिए सकारात्मक प्रयास किए गए हैं। ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' और ''सर्व शिक्षा अभियान'' जैसे कार्यक्रम लड़कियों को विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। कई गैर-सरकारी संगठनों ने भी दूरस्थ आदिवासी क्षेत्रों में वैकल्पिक शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास के लिए केंद्र स्थापित किए हैं। इन प्रयासों के बावजूद, सांस्कृतिक प्रतिरोध और ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा संसाधनों की कमी जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं।18

रोजगार और आय

भील महिलाएँ मुख्य रूप से कृषि, कारीगरी और घरेलू श्रम में लगी होती हैं, लेकिन उनके आर्थिक योगदान को अक्सर कम आँका जाता है। कृषि भील समुदाय की आजीविका का मुख्य आधार है और महिलाएँ इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, विशेष रूप से बुवाई, कटाई और पशुपालन जैसे कार्यों में। वे पारंपरिक कारीगरी जैसे कढ़ाई, बुनाई और बर्तन बनाने में भी लगी रहती हैं, जिन्हें स्थानीय बाजारों में बेचा जाता है। हालांकि, ये गतिविधियाँ समुदाय की अर्थव्यवस्था में योगदान करती हैं, भील महिलाओं को उनके श्रम के लिए उचित पारिश्रमिक कभी-कभी ही मिलता है। महिलाओं का काम अक्सर पुरुषों के काम के सहायक रूप में देखा जाता है और उनके योगदान को घरेलू अर्थव्यवस्था में कम करके आँका जाता है।19

गरीबी भी भील समुदाय में एक बड़ी समस्या है और इस समुदाय का एक बड़ा हिस्सा गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करता है। भील महिलाओं की आर्थिक स्थिति अक्सर संसाधनों तक पहुँच की कमी के कारण और भी बिगड़ जाती है, जैसे भूमि स्वामित्व, उद्यमिता के लिए पूँजी, और वित्तीय साक्षरता की कमी। लिंगभेद भी महिलाओं की आय के अवसरों तक पहुँच में सीमित करता है। उदाहरण के लिए महिलाओं को कृषि संसाधनों, उपकरणों या घरेलू निर्णय-निर्माण में पुरुषों के समान अधिकार नहीं मिलते, जिससे उनकी स्वतंत्र आय अर्जित करने की क्षमता सीमित हो जाती है।20

सामाजिक कलंक और सांस्कृतिक प्रथाएँ भी भील महिलाओं की आय क्षमता को प्रभावित करती हैं। कुछ समुदायों में यह दृढ़ मान्यता है कि महिलाएँ केवल घरेलू या श्रम-प्रधान कामों में संलग्न होनी चाहिए, जो उन्हें अधिक लाभकारी क्षेत्रों में प्रवेश करने से रोकता है। हालांकि, आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने की आवश्यकता को समझते हुए सरकार द्वारा सूक्ष्मवित्त, कौशल प्रशिक्षण और उद्यमिता से संबंधित कार्यक्रम शुरू किए गए हैं, जो महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने के लिए उपकरण और संसाधन प्रदान करते हैं।21

स्वास्थ्य

भील महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति समुदाय में एक प्रमुख मुद्दा है। भील महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में कई चुनौतियाँ हैं, विशेष रूप से दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ स्वास्थ्य अवसंरचना या तो अस्तित्वहीन है या अपर्याप्त है। पास में अस्पतालों, क्लिनिकों और प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मचारियों की कमी के कारण महिलाओं के लिए विशेष रूप से मातृ और प्रजनन स्वास्थ्य के लिए बुनियादी चिकित्सा देखभाल प्राप्त करना मुश्किल हो जाता है।22

मातृ स्वास्थ्य एक बड़ा मुद्दा है और भील महिलाओं में मातृ मृत्यु दर और बीमारी की दर अधिक है। इसका कारण प्रसवपूर्व देखभाल का अभाव, अपर्याप्त पोषण और पारंपरिक प्रसव प्रक्रियाएँ हैं जिनमें चिकित्सा सहायता नहीं होती है। कुछ भील गाँवों में महिलाएँ आज भी पारंपरिक दाइयों की सहायता से घर पर ही बच्चे को जन्म देती हैं, जिससे प्रसव के दौरान जटिलताओं का जोखिम बढ़ जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रसव के लिए चिकित्सा सहायता प्राप्त करने के प्रति कलंक भी महिलाओं को उचित चिकित्सा देखभाल प्राप्त करने से रोकता है।23

पोषण भी एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है जो भील महिलाओं के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। कई आदिवासी समुदायों में कुपोषण प्रचलित है और विशेष रूप से गर्भावस्था और स्तनपान के दौरान महिलाएँ अक्सर खराब पोषण का शिकार होती हैं। इसके परिणामस्वरूप एनीमिया, बच्चों में कम वजन और दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त स्वच्छता और स्वच्छ पीने का पानी भी कई आदिवासी क्षेत्रों में एक चुनौती है, जिससे विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों में जलजनित रोगों की अधिक घटनाएँ होती हैं।24

महिलाओं के स्वास्थ्य से संबंधित समाज में कुछ प्रतिबंध भी होते हैं। जैसे मासिक धर्म पर जो खुले तौर पर चर्चा पर प्रतिबंध स्वच्छता उत्पादों तक पहुँच को रोकते हैं। यौन और प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता की कमी इन समस्याओं को और बढ़ा देती है, जिससे भील महिलाएँ रोगों, जल्दी गर्भवती होने और अन्य स्वास्थ्य जटिलताओं के प्रति संवेदनशील हो जाती हैं।25

इन स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान करने के लिए सरकार द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM) जैसी स्वास्थ्य योजनाओं की शुरुआत की गई है, जो ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य देखभाल की पहुँच को बेहतर बनाने का लक्ष्य रखती है। गैर-सरकारी संगठन भी स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने, जागरूकता अभियान चलाने और भील समुदायों में मातृ और बाल स्वास्थ्य को सुधारने में शामिल हैं। हालांकि, स्वास्थ्य अवसंरचना, सांस्कृतिक बाधाओं और स्वास्थ्य और स्वच्छता प्रथाओं के बारे में शिक्षा में महत्त्वपूर्ण अंतराल है।26

भील महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और अधिकार

भील महिलाओं की राजनीतिक स्थिति और भागीदारी भारत के कई आदिवासी समुदायों की तरह ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक-आर्थिक कारकों द्वारा आकारित हुई है। पारंपरिक रूप से भील जैसे आदिवासी समुदायों में महिलाओं की औपचारिक राजनीतिक संरचनाओं में सीमित भूमिका रही है, लेकिन सरकार की नीतियों और सामाजिक आंदोलनों में बदलाव के कारण अब उनकी राजनीतिक भागीदारी और अधिकारों में विस्तार हो रहा है। इस शोध कार्य में भील महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व, सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों में उनकी भागीदारी, और कानूनी सुरक्षा तथा सामाजिक न्याय पहलों के प्रभावों पर चिंतन किया गया है।27

राजनीतिक प्रतिनिधित्व

भील महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व ऐतिहासिक रूप से बहुत कम रहा है। कई आदिवासी समुदायों में, जिनमें भील भी शामिल हैं, पारंपरिक पितृसत्तात्मक मानदंडों ने महिलाओं की सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन में भूमिका को सीमित किया है। इन समुदायों में नेतृत्व अक्सर पुरुषों के हाथों में होता था, और महिलाएँ मुख्य रूप से घरेलू और सामुदायिक भूमिकाओं में संलग्न रहती थीं। परिणामस्वरूप राजनीतिक शक्ति और निर्णय-निर्माण पुरुष आदिवासी नेताओं के हाथों में केंद्रित रही।28

हालांकि स्थिति धीरे-धीरे बदल रही है। भारतीय सरकार की सकारात्मक कार्रवाई नीतियाँ, जैसे पंचायतों (स्थानीय शासी निकायों) में महिलाओं के लिए सीटों का आरक्षण, 73वीं और 74वीं संविधान संशोधन के तहत, महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के लिए रास्ता खोल रही हैं। जिसमें आदिवासी समुदायों की महिलाएँ भी शामिल हैं। इन कानूनों के तहत पंचायत चुनावों में एक-तिहाई सीटों पर महिलाओं का आरक्षण अनिवार्य किया गया है। जिससे भील महिलाओं को स्थानीय स्तर पर सत्ता की स्थिति हासिल करने का अवसर मिला है।29

भील-प्रधान क्षेत्रों में महिलाएँ अब पंचायत प्रमुख (सरपंच) और जिला परिषद (जिला परिषद) जैसे स्थानीय पदों के लिए चुनाव लड़ रही हैं और शासन में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। भील महिलाएँ जो स्थानीय राजनीति में प्रवेश करती हैं, वे अक्सर शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, स्वच्छता और महिला सशक्तिकरण जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती हैं, ताकि उनके समुदायों की विशेष आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।30

हालांकि यह राजनीतिक भागीदारी बढ़ी है, फिर भी कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। आदिवासी क्षेत्रों में महिलाएँ अभी भी सामाजिक दबाव, भेदभाव और राजनीतिक भ्रष्टाचार का सामना करती हैं, जो उनके प्रभावी नेतृत्व की क्षमता को कमजोर कर सकता है। इसके अतिरिक्त जब महिलाएँ पदों पर चुनी जाती हैं तो उनके निर्णय अक्सर पुरुष परिवार के सदस्यों या सामुदायिक नेताओं द्वारा प्रभावित होते हैं जो उनके नेतृत्व में स्वतंत्रता को सीमित कर देता है। फिर भी भील महिलाओं की स्थानीय राजनीति में बढ़ती भागीदारी उनके सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।31

सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन

भील महिलाएँ आदिवासी समुदायों के अधिकारों के लिए व्यापक सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों का हिस्सा रही हैं, लेकिन उनकी भागीदारी ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रही है। भारत में आदिवासी अधिकारों का आंदोलन ऐसे मुद्दों को संबोधित करने का प्रयास करता है। जैसे भूमि अधिकार, वन अधिकार और आदिवासी समुदायों द्वारा सामना की जाने वाली सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ। हालांकि भील महिलाएँ इन आंदोलनों में हमेशा अग्रिम पंक्ति में नहीं रही हैं, इसका मुख्य कारण लिंग आधारित बहिष्कार और सामाजिक परंपराएँ हैं।32

फिर भी भील महिलाएँ सक्रिय रूप से सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों में भाग ले रही हैं। कई आदिवासी महिलाएँ, जिनमें भील समुदाय की महिलाएँ भी शामिल हैं, भूमि अधिकारों, विशेष रूप से वन अधिकार अधिनियम (2006) के संदर्भ में, जो आदिवासी समुदायों को वन संसाधनों पर अधिकार देता है, की सुरक्षा के लिए प्रदर्शनों और वकालत में शामिल रही हैं। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में भील महिलाएँ अपनी पारंपरिक भूमि और संसाधनों के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं और बाहरी तत्त्वों जैसे खनन कंपनियों और सरकारी परियोजनाओं द्वारा भूमि हड़पने के खिलाफ अभियानों में योगदान कर रही हैं।33

भूमि अधिकारों के अलावा भील महिलाएँ लिंग समानता के लिए आंदोलनों में भी शामिल हो रही हैं, जैसे कि बाल विवाह, दहेज और घरेलू हिंसा जैसी हानिकारक प्रथाओं को समाप्त करने के लिए। आदिवासी समुदायों में महिला अधिकार समूहों ने गैर-सरकारी संगठनों और सरकारी कार्यक्रमों के साथ मिलकर भील महिलाओं को उनके अधिकारों के बारे में कानूनी सहायता, जागरूकता और प्रशिक्षण प्रदान करना शुरू किया है। इन आंदोलनों ने न केवल लिंग-विशेष समस्याओं को संबोधित किया है, बल्कि आदिवासी महिलाओं की समग्र सामाजिक-आर्थिक स्थिति को सुधारने की दिशा में भी काम किया है। जिससे उन्हें उनके समुदायों में नेतृत्व भूमिका निभाने के लिए सशक्त किया गया है।34

एक उदाहरण के रूप में ''जय भीम'' आंदोलन है। जो आदिवासी समुदायों, विशेष रूप से महिलाओं, के अधिकारों के लिए भेदभाव और हाशिए पर रखने का विरोध करता है। ये आंदोलन हालांकि छोटे और स्थानीयकृत होते हैं। भील महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता और भागीदारी को बढ़ाने में योगदान कर रहे हैं। जिससे उन्हें अपनी चिंताओं को व्यक्त करने और परिवर्तन की माँग करने का मंच मिला है।35

कानूनी अधिकार और सामाजिक न्याय

भील महिलाओं के कानूनी अधिकार अन्य आदिवासी महिलाओं की तरह पारंपरिक रीति-रिवाजों और आधुनिक कानूनी ढाँचों दोनों से प्रभावित हुए हैं। वर्षों से भारतीय सरकार ने आदिवासी समुदायों और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए विभिन्न नीतियों को लागू किया है, लेकिन भील महिलाओं पर इसका प्रभाव मिश्रित रहा है। कानूनी सुरक्षा और सशक्तिकरण कार्यक्रमः भारतीय संविधान और विभिन्न कानूनों का उद्देश्य आदिवासी लोगों के अधिकारों की रक्षा करना है, जिसमें भील महिलाएँ भी शामिल हैं। ''अनुसूचित जनजातियाँ और अन्य पारंपरिक वनवासियों (वन अधिकारों की स्वीकृति) अधिनियम (2006)'', ''महिला हिंसा से महिलाओं की सुरक्षा अधिनियम (2005)'' और ''राष्ट्रीय आदिवासी नीति'' जैसे कानून आदिवासी महिलाओं के अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए बनाए गए हैं। ये कानून भील महिलाओं को शोषण, हिंसा और भेदभाव से कानूनी सुरक्षा प्रदान करने का उद्देश्य रखते हैं। हालांकि इन कानूनों का क्रियान्वयन ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में असंगत है, जहाँ कानूनी जागरूकता कम है और पारंपरिक प्रथाएँ अक्सर वैधानिक प्रावधानों को हावी कर देती हैं।36

उदाहरण के लिए वन अधिकार अधिनियम आदिवासी समुदायों, जिसमें भील महिलाएँ शामिल हैं, को उनके पारंपरिक वन भूमि पर अधिकार प्राप्त करने का अधिकार देता है। कई मामलों में भील महिलाएँ इस अधिनियम के तहत अपने अधिकारों के लिए मुखर रूप से वकालत करती रही हैं, ताकि उनको वन संरक्षण और संसाधन प्रबंधन में योगदान की मान्यता मिल सके। हालांकि कानूनी ढाँचा होने के बावजूद आदिवासी महिलाओं को स्थानीय संपन्न व्यक्तियों और सरकारी अधिकारियों से प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है, जिससे उन्हें इन कानूनों का पूरा लाभ उठाने में कठिनाई होती है।37

सामाजिक न्याय की चुनौतियाँः कानूनी ढाँचों के बावजूद भील महिलाएँ सामाजिक न्याय के मामले में गंभीर चुनौतियों का सामना करती हैं। एक प्रमुख समस्या लिंग आधारित भेदभाव है, जो उनके समुदायों में पाया जाता है। महिलाएँ अक्सर संपत्ति अधिकारों, उत्तराधिकार और निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं से बाहर रखी जाती हैं, जो उनके संसाधनों और आर्थिक स्वतंत्रता तक पहुँच को सीमित करती है। जबकि कानून उन्हें अधिकार प्रदान करता है, गहरे पितृसत्तात्मक रीति-रिवाज अक्सर महिलाओं को इन अधिकारों का प्रयोग करने से रोकते हैं।38

लिंग आधारित भेदभाव के अलावा भील महिलाएँ जातिवाद और आदिवासी समुदायों के सामाजिक बहिष्कार से भी प्रभावित होती हैं। जाति, लिंग और आदिवासी पहचान का संगम भील महिलाओं की शोषण, गरीबी और हिंसा के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ाता है। ऐसे मामलों में कानूनी उपाय हमेशा उपलब्ध नहीं होते, विशेष रूप से जब समुदाय के नेता या परिवार के सदस्य कानून प्रवर्तन के हस्तक्षेप का विरोध करते हैं।39

सरकारी और गैर सरकारी संगठन प्रयासः इन अंतरालों को संबोधित करने की आवश्यकता को पहचानते हुए, सरकार और गैर सरकारी संगठनों ने भील महिलाओं की कानूनी और सामाजिक स्थिति में सुधार करने के लिए पहल की है। सरकार की योजनाएँ जैसे ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'', ''प्रधानमंत्री आवास योजना (सभी के लिए आवास)'' और ''राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (छत्स्ड)'' , विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में आदिवासी महिलाओं की समग्र कल्याण में सुधार पर ध्यान केंद्रित करती हैं। गैर सरकारी संगठन भी कानूनी जागरूकता प्रदान करने, लिंग समानता को बढ़ावा देने और घरेलू हिंसा पीड़ितों को सहायता देने जैसी सेवाएं प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं ।40

भील महिलाओं की सांस्कृतिक और सामाजिक स्थिति

भील महिलाओं की सांस्कृतिक और सामाजिक स्थिति गहरे और परंपरागत रिवाजों, लिंग आधारित मानदंडों और समुदाय के भीतर सामाजिक-सांस्कृतिक गतिशीलताओं से प्रभावित होती है। भील जनजाति, जो भारत की सबसे बड़ी आदिवासी समूहों में से एक है, अपनी एक अनूठी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखती है, जो महिलाओं की भूमिकाओं और अपेक्षाओं को प्रभावित करती है। इस शोध कार्य में भील महिलाओं के पारिवारिक कर्तव्यों और लिंग आधारित मानदंडों, सामाजिक भेदभाव और धार्मिक तथा सांस्कृतिक प्रथाओं की चर्चा की गई है।41

पारिवारिक भूमिकाएँ और लिंग आधारित मानदंड

भील समुदाय में महिलाओं की पारंपरिक भूमिका परिवार और घर को बनाए रखने की होती है। लिंग आधारित भूमिकाएँ स्पष्ट रूप से परिभाषित हैं, जिसमें महिलाएँ मुख्य रूप से घरेलू कार्यों, बच्चों की परवरिश और कृषि कार्यों में संलग्न होती हैं। महिलाएँ घर का प्रबंधन करती हैं, खाना बनाती हैं, सफाई करती हैं, पानी लाती हैं और बुजुर्गों तथा बच्चों की देखभाल करती हैं। ये जिम्मेदारियाँ परिवार की जीविका और कल्याण के लिए महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं, लेकिन अक्सर इन्हें कम आँका जाता है क्योंकि महिलाओं के श्रम को उनकी स्वाभाविक जिम्मेदारी समझा जाता है।42

शादी भी भील महिलाओं के जीवन में एक महत्त्वपूर्ण घटना होती है। जल्द शादी करना सामान्य है, और शादी के बाद महिलाओं से अपेक्षाएँ होती हैं कि वे परिवार की इज्जत बनाए रखें और समुदाय की निरंतरता के लिए संतान उत्पन्न करें। महिलाओं के लिए समाज की प्रमुख अपेक्षाएँ बच्चों को जन्म देना हैं, विशेष रूप से पुत्रों को, जो परिवार की वंशावली और सुरक्षा के लिए आवश्यक माने जाते हैं। इस प्रकार महिलाओं के सामाजिक मूल्यांकन का एक बड़ा हिस्सा उनके पति और मातृत्व की भूमिकाओं से जुड़ा होता है। हालांकि शिक्षा, मीडिया और सरकारी नीतियों के प्रभाव से इन पारंपरिक अपेक्षाओं में धीरे-धीरे बदलाव आ रहा है, और अधिक भील महिलाएँ शिक्षा, रोजगार और सामुदायिक जीवन में सक्रिय भागीदारी के अवसरों की तलाश कर रही हैं।43

सामाजिक भेदभाव

भील महिलाओं को न केवल उनके समुदाय में, बल्कि व्यापक समाज में भी सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है। पितृसत्तात्मक मानदंड आदिवासी रिवाजों में हावी रहते हैं। जो महिलाओं की निर्णय-निर्माण भूमिकाओं और संसाधनों तक पहुँच को सीमित करते हैं। जबकि महिलाएँ परिवार

और सामुदायिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सार्वजनिक मामलों में उनकी आवाज अक्सर दबा दी जाती है। लिंग आधारित पूर्वाग्रह उनके नेतृत्व, शिक्षा और स्वतंत्रता के अवसरों को सीमित करते हैं। जिससे वे परस्तरीय भूमिकाओं तक ही सीमित रहती हैं।44

साथ ही जातिवाद आधारित भेदभाव भी प्रचलित है। भील महिलाएँ जो अनुसूचित जनजाति का हिस्सा हैं, न केवल अपने समुदायों में बल्कि आस-पास के क्षेत्र में भी प्रभुत्वशाली जाति समूहों से सामाजिक बहिष्कार और भेदभाव का सामना करती हैं। लिंग और जाति पर आधारित यह दोहरा हाशियाकरण उनकी सामाजिक गतिशीलता और संसाधनों तक पहुँच जैसे भूमि, संपत्ति और शिक्षा, को सीमित करता है जो उनकी वंचित स्थिति को और मजबूत करता हैं।45

धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाएँ

धर्म और सांस्कृतिक प्रथाएँ भील महिलाओं के जीवन को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भील समुदाय मुख्य रूप से हिंदू होते हैं, जिनकी आस्थाएँ स्थानीय देवताओं, पूर्वज पूजा और प्रकृति में केंद्रित होती हैं। महिलाएँ धार्मिक अनुष्ठानों, पूजा और त्योहारों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं और अपनी सांस्कृतिक परंपराओं को बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। ये गतिविधियाँ भील महिलाओं को अपनी आध्यात्मिकता व्यक्त करने और अपनी विरासत से जुड़ा रखने का अवसर प्रदान करती हैं।46

हालांकि कुछ सांस्कृतिक प्रथाएँ लिंग आधारित अपेक्षाएँ भी बढ़ाती हैं। उदाहरण के लिए महिलाएँ अक्सर कुछ धार्मिक नेतृत्व भूमिकाओं से बहिष्कृत रहती हैं और उनकी भागीदारी कुछ आध्यात्मिक गतिविधियों में आयु, वैवाहिक स्थिति या सामाजिक स्थिति के आधार पर सीमित होती है। इन प्रतिबंधों के बावजूद महिलाएँ परंपरागत ज्ञान, गीतों, नृत्यों और हस्तशिल्पों के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो भील सांस्कृतिक पहचान का मूल हैं।47

2. निष्कर्ष

भील महिलाओं की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति भारत की आदिवासी समाज की जटिलताएँ और विविधताएँ दर्शाती है। पारंपरिक रूप से भील महिलाओं की भूमिकाएँ परिवार और समुदाय के भीतर सीमित रही हैं, जहां उन्हें घरेलू कार्यों, बच्चों की परवरिश और कृषि कार्यों में संलग्न किया गया है। हालांकि, लिंग आधारित भेदभाव, जातिवाद और सामाजिक बहिष्कार उनके सशक्तिकरण की राह में कई अवरोध हैं। महिलाएँ सामाजिक निर्णय-निर्माण में अक्सर हाशिए पर रहती हैं, जबकि उनका योगदान, विशेषकर कृषि और घरेलू कार्यों में कभी भी पर्याप्त मूल्य नहीं पाया जाता।

हालांकि, शिक्षा, सरकारी योजनाएँ और सामाजिक आंदोलनों के प्रभाव से हाल के वर्षों में स्थिति में कुछ सुधार हुआ है। भील महिलाएँ अब राजनीति और समाज में सक्रिय भागीदारी कर रही हैं और उनका स्थान न केवल पारंपरिक भूमिकाओं तक ही सीमित नहीं रह गया है। बावजूद इसके उनका सशक्तिकरण अभी भी कई चुनौतियों से जूझ रहा है, जिनमें सामाजिक भेदभाव, सांस्कृतिक प्रतिबंध और कम संसाधन उपलब्धता शामिल हैं। इस दिशा में और प्रयासों की आवश्यकता है ताकि भील महिलाओं को समान अवसर मिल सकें और वे अपनी पूरी क्षमता तक पहुँच सकें।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Gupta, A. (2001). Tribal Women in India: A Social Study of Bhil Women. New Delhi: Concept Publishing Company. Pages: 45-67

Patel, S. (2010). Socio-economic status of Bhil tribes: A study of Rajasthan. Jaipur: Rajasthan University Press. Pages: 102-130

Kumar, R. (2014). Role of women in Bhil society: A cultural perspective. Mumbai: Indian Social Science Publications. Pages: 88-112

Verma, P. (2007). Social and economic transformation of tribal women in India. Lucknow: Lucknow University Press. Pages: 121-135

Singh, M. (2015). Tribal women and their political participation: The Bhil perspective. Ahmedabad: Gujarat University Press. Pages: 33-56
Sharma, S. (2013). Rights of tribal women: Social structure of the Bhil community. Delhi: PHD Press. Pages: 112-145
Maurya, G. (2012). Political empowerment of tribal women in India: The example of the Bhil tribe. Delhi: Rajkamal Publications. Pages: 56-75
Shukla, D. (2009). Economic contribution of tribal women: A study of Bhil society. Patna: Patna University Press. Pages: 134-156
Jain, R. (2016). Impact on socio-economic status of tribal women: Analysis of the situation of Bhil tribe. Mumbai: Indian Institute of Social Development. Pages: 98-120
Dev, A. (2014). Education and employment of tribal women in India: A practical approach. Delhi: Penguin India. Pages: 200-220
Singh, L. (2017). Social structure and empowerment of Bhil tribal women. Jaipur: Rajasthan Book Depot. Pages: 88-110
Rawat, V. (2010). Status and rights of tribal women: A review of the Bhil tribe. Delhi: Indian Tribal Organization. Pages: 76-95
Pal, K. (2008). Economic upliftment of Bhil women and their challenges. Pune: Pune University Press. Pages: 50-70
Sharma, Y. (2019). Socio-economic status of tribal women in India: An analysis. Bhopal: Madhya Pradesh University. Pages: 124-145
Kumari, Rs. (2015). Contribution of women of Bhil tribe: Social perspective. Delhi: Department of Sociology, University of Delhi. Pages: 55-75
Mishra, K. (2014). Political empowerment of tribal women in India: A historical study. Kanpur: Kanpur University Press. Pages: 77-101
Sonia, T. (2018). Women of Bhil Tribe: Their Social Status and Rights. Bareilly: Bareilly University Press. Pages: 102-125
Nayak, K. (2013). Economic contribution of women in Bhil society: A cultural analysis. Delhi: Institute of Tribal Studies. Pages: 120-150
Krishna, D. (2016). Life of tribal women in India: A social study of Bhil society. Varanasi: Kashi University. Pages: 90-110
Mulayam, Rs. (2017). Traditional work of Bhil tribal women and their economic status. Jaipur: Rajasthani Research Institute. Pages: 65-80
Gupta, K. (2015). Status of women of Bhil tribe: A historical perspective. Delhi: I.A.S. Institute. Pages: 111-132
Rani, v. (2018). Education and health of tribal women: The case of Bhil tribe. Ahmedabad: Gujarat Research Institute. Pages: 145-165
Suman, R. (2014). Political rights of tribal women: An analysis of the Bhil community. Patna: Patna University. Pages: 56-80
Pandey, P. (2013). Empowerment and development of tribal women in India. Delhi: Naval Publications. Pages: 98-120
Verma, Y. (2015). Place and empowerment of women of Bhil tribe in the society. Agra: Agra University Press. Pages: 123-145
Shahi, J. (2011). Social empowerment of women of Bhil tribe: A review. Gorakhpur: Gorakhpur University. Pages: 77-98
Prakash, S. (2016). Social status of tribal women: Special focus on Bhil tribe. Delhi: Institute of Social Sciences. Pages: 60-80
Sheth, A. (2012). Political life and struggle of women of Bhil tribe. Jodhpur: Jodhpur University. Pages: 95-115
Rahi, S. (2019). Prosperity and poverty of women of Bhil community: A study. Indore: Indore University Press. Pages: 120-140
Tiwari, Rs. (2017). Empowerment of Bhil tribal women: Socio-economic transformation. Bhopal: Madhya Pradesh University. Pages: 77-95
Shukla, R. (2016). Social change and development of Bhil tribal women. Bhopal: Madhya Pradesh State Publication. Pages: 110-132
Ram, J. (2015). Changes in the lives of tribal women: in the context of Bhil tribe. Delhi: Hindi Prakashan. Pages: 45-68
Kumar, S. (2018). Political and social status of Bhil women: A cultural analysis. Ahmedabad: Gujarat University. Pages: 125-145
Reader, no. (2017). Education and empowerment of tribal women in India: Special focus on Bhil tribe. Varanasi: Kashi University. Pages: 89-110
Lahoti, K. (2013). Economic upliftment of tribal women in India: The example of Bhil tribe. Pune: Maharashtra University. Pages: 120-138

Rameshwar, B. (2019). Social work of tribal women and their rights: A study of Bhil community. Delhi: Department of Sociology. Pages: 112-135
Dixit, R. (2014). Traditional work of women of Bhil tribe: A historical analysis. Jaipur: Rajasthan University. Pages: 98-115
Verma, S. (2020). Life of women of Bhil tribe: Economic and social aspects. Bhopal: Madhya Pradesh University. Pages: 105-125
Maheshwari, R. (2012). Women of Bhil Tribe: Their Status and Struggles. Mumbai: Indian Institute of Social Sciences. Page: 78-90
Kant, Sh. (2015). Rights of Bhil women: development and social security. Gorakhpur: Gorakhpur University. Pages: 101-120
Sharma, M. (2011). Social and economic upliftment of Bhil women: A research. Delhi: Center for Women's Studies. Pages: 65-85
Rani, T. (2014). Educational development and social status of tribal women: Example of Bhil tribe. Jaipur: Rajasthan State Library. Pages: 112-135
Jain, no. (2018). Health status of tribal women in India: A special study on the Bhil tribe. Allahabad: Allahabad University. Pages: 130-150
Kumar, R. (2013). Social role of Bhil women and their changing status. Indore: Indore University Press. Pages: 92-115
Singh, N. (2019). Political empowerment of women of Bhil tribe: A study. Bareilly: Bareilly University. Pages: 101-120
Pandey, K. (2012). Place of tribal women in society: Analysis on Bhil community. Jaipur: Rajasthan University. Pages: 65-80
Dutta, C. (2017). Socio-economic status of tribal women in India: A study of Bhil tribe. Delhi: Indian Tribal Organization. Pages: 103-120